स्वयंभू कृत : 'रिट्ठणेमि चरिउ' मांथी पच्चीश देश्य शब्दो

जेम जेम वधु प्रमाणमाँ अने वधु जूनुँ प्राकृत अपभ्रंश साहित्य सुलभ थतुँ जाय छे तेम तेम प्राकृत-अपभ्रंशना शब्दो अने प्रयोगो पर वधु प्रकाश पडतो जाय छे। [हेमचन्द्राचार्ये नोंधेली देश्य सामग्रीनी स्पष्टता थती जाय छे,] तेम पूर्व प्रकाशित ग्रंथोमाना विरल के संदिग्ध प्रयोगो समझाता जाये छे।

अहीं उपलब्धमां प्राचीनतम कही शकाय तेवा अपभ्रंश महाकवि स्वयंभूदेवना अद्यावधि अप्रकाशित 'रिट्ठणेमिचरिउ' के 'हरिवंशपुराण' ओ बृहत् काव्यना शरुआतना दस बार संधिमांथी थोडाक प्रयोगो विशे नोंध आपुं छुं। आमाटे भांडारकर प्राच्य विद्या मंदिरनी हस्त प्रत संग्रहनी ओक हस्त प्रतनो उपयोग कर्यो छे। प्रतनो उपयोग करवा देवा माटे हुं ते संस्थानो ऋणी छुं।

१. अवकख 'चिंता'

जन्म्या पछी शिशु कृष्णने 'पूतना वगेरे दुष्ट सत्त्वोने सीधा करवा केटला दिवस राह जोवी पडशे ?' ओवी चितामां ऊंघ नथी आवती। ओ रीतनी कल्पना करतां कवि कहे छे :

कण्हहो नी सामग्गि–अवकख अे
निद्दण अेइ रणंगण–कंख से
(५–१–१)

'रणसंग्राम झंखता कृष्णने युद्धनी सामग्री न होवानी चितामां निद्रा नथी आवती।'

स्वयंभूना 'पउमचरिउ' मां पण आ शब्दनो ओक प्रयोग छे। सीताने आश्वासन आपतां विभीषण समभावपूर्वक तेनी ओलख पूछे छेते प्रसंगनी ओक पंक्ति आ प्रमाणे छे :

कासु धीय कहि को तुम्हहं पइ
अवख वहंतु विहीसणु जंपइ
(४२–१–२)

'कहे तुं कोनी पुत्री छे ? तारो पति कोण छे ?' सचित जाने लो विभीषण पूछयुं। टिप्पणमां 'अवख वहंतु' नो अर्थ 'चिन्तावान्' करे लो छे। 'अकचक्ष' उपरथी देश्य 'अवयकख्', 'अवकख्' (=जोवूं देख भाल करवी) ओना उपरथी आ शब्द थयानी संभावना छे। सरखावो 'भालवुं' अने 'संभालवुं'।

२. कूडागार 'खडकलो'

प्राकृत कोशोमां 'कूडागार' नो 'शिखरना आकार नुं घर' के 'शिखर उपरनुं घर' ओवा ओवा अर्थ आपेला छे। पण रिट्ठ० मां 'उपर शिखर के टोच नीकली होय ते रीते करे लो खडकलो' ओवा अर्थमां ते मले छे :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहु इंधण कूडागार किय, संचारिम महिहर णाई थिय
(७–१२–१)

'इंधण खडकीने अनेक ढग करवा मां आव्या—जाणे के जंगम पर्वतो आवीने ऊभा ।'

३. खेमाखेमि　'साम सामे क्षेम कुशलनी पूछ परछ'

थोवंतरि जादव नहिं जि आय
अवरुप्परु खेमाखेमि जाय
(१६–१२–५)

'टुंक समयमां यादवो त्यांज आवी पहोंच्या । अरस परस क्षेमकुशल पुछ्यां' ।

सं, 'क्षेम', प्रा, 'खेम', उपरथी

'हत्था हत्थि' वगेरेनी जेम द्विरुक्ती प्रयोग 'खेमाखेमि' 'कुसलाकुसलि' पण वपरायो छे ।

४. 'खोल्लडउं'　'कूवो'

भरवाडनी झूंपडो के कूबा जेवा अर्थमां आ नवो शब्द छे । दे. ना. (२,७४) मां 'बुखल्ल' शब्द 'कुटी' ना अर्थमां तथा प्राकृतकोशमा: 'खोल्लि' शब्द 'कोटर' ना अर्थमां छे । गुजराती 'खोलडुं' 'खोरडुं' अने 'खोली' आनी साथे संकलायेला जणाय छे । अर्थ बदलायो छे, 'खोरडुं' हवे 'घर' उपरान्त 'छापरा' नो अर्थ पण धरावे छे । नीचेनी उकटणमां मथुरा नगरीना घरोनी साथे गोकुलना 'खोल्लड' नो विरोध छे । प्रसंग कृष्णनी उपस्थिति ने कारणे गोकुलनी धन्यता अने शोभानो अने मथुरानी निस्तेजपणानो छे :

खोल्लडइं वि गोट्ठे मणोहरइं
महु रहे रोवंति णाईं घरइं (४–१३–६)

'नेसमां कूबा पण मनोहर लागता हता, ज्यारे मथुरामां घरो पण जाणे के रोतां हतां' ।

टर्नरना भारतीय प्रार्थना तुलनात्मक कोशमां 'खोल्ल' 'खोल' अने 'खोर' माँथी आवेला भारतीय शब्दोमां 'ऊंडो खाडो : 'पोलाण', 'बखोल', 'कोतर', 'गुफा' अेवो अर्थ मुख्य छे । (जुओ संख्यांक ३६४३, ३६४६)

५. चंडिल्ल　'वालंद'

दे. ना. ३, २ मां 'चंडिल' संस्कृत आने 'चंदिल' देश्य गण्या छे । अहीं मुंडन माथे आवेला नावीने प्रद्युम्न धमकावी, मूंडीने काढी मूके छे । ते प्रसंग छे :—

'सो चंडिल्लु कुमारं तज्जिअऊ,
मुंडिय डेण सिरेण विसज्जिअऊ (१२–१२–२)

'कुमार ते वालंद ने धमकाव्यो अने माथुं मुंडाने काढी मूक्यो' ।

६. छुध हीर　'चन्द्र'

दे. ना. ३, ३८ मां 'बालक' अने 'चंद्र' ना अर्थ मां 'छुधहीर' नोंधायो छे । अने पुष्पदंत मां तथा 'पउम चरिउ' मां पण ते मले छे । *नानो' 'हीरो' 'हीरलो' अेवा यौगिक अर्थ उपर थी आलाक्षणिक अर्थ रूढ बन्यो छे ।*

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

(जुवो स्टडिज इन हेमचन्द्र गु. देशीनाममाला; १६६६ संख्यांक २००)

कांतिल्लु णिअच्छिअे छुधहीरि (७–६–१)

'(स्वप्न मां) चन्द्र जोयो तेथी (जन्मनारो पुत्र) कांतिमान थशे'।

छण छुधहीर छवि छाय मुहिय (१३–७–३)

'पूनम ना चंद्रनी कांति जेवा कांति धरायता मुख वाली'।

७. झल झलाव् 'छलकाववु' 'उभराववु'

प्राकृत कोश 'झलहलिय' शब्द 'सायर' साथे वपरायानु नोंध छे। अर्थ 'क्षुब्धता' करतां उभराइ ऊठवानो जणाय छे। पाछलना संस्कृत मां 'झल जगुला' आंख मां आपतां झल झलियां ना अर्थ मांछे तेमां पण आंखों उभराया नो भाव छे। नीचे नी पंक्ति मां कृष्णे फूंकेला शंखनो घोर शब्द वर्णवतां तेथी सागर पण छलकाइ ऊठ्या अेवुं कह्यूं छे :—

झल गुलाविय सयल विसायर (६–१०–७)
'बधा सागरो ने पण ऊभरावी दीधा'

८. लघुतावाचक 'ड' प्रत्यय

स्वयंभू मां 'ड' प्रत्यय अनिवार्यपणे तुच्छ तानोज भाव दर्शाववा वपरायो छे। 'पउमचरिउ' मां अेक बे उदाहरण छे। रिट्ठ० मांथी नीचेनां जुओ :

विज्जाहरि तुहुं णव बहुडिय हे
किह णमिय सवत्ति हे लहुडिय हे। (१०–६–३)

'तुं विद्याधरी होवा छतां ताराथी नानकडी अने नव वधू अेवी तारी सपत्नीने केम नमन करयूं ?

(सत्यभामा ने उद्देशीने रूकिमणीना संबंध मां आ कृष्णनी उक्ति छे)

अे पछीनी पंक्ति मां 'तणुतणुयडिय' – 'कृश अने शुकुमार शरीर वाली अेवो प्रयोग छ।

उपर ५. ४. नीचे आपेला उद्धरणमां 'मुंडियडेण' अे प्रयोग भी पण 'ड' प्रत्यय तुच्छकार वाचक वाचक छे। अने तेज प्रमाणे ते 'खोल्लड' मां पण छे।

६. डिक्करूय 'छोकरू'

'दीकरो' ना मूल साथे संकलायेण आ शब्द मां प्राशस्त्य वाचक 'रूय' प्रत्यय उपर थी थयेले 'रूय' प्राकृत प्राप्त नामो मां (वच्छरुप, पड्डरूप) तथां गुजराती 'भांडरू', 'छोरू', 'वाछरू' 'अेरू', वगेरे मां मले छे। मराठी 'लेकरू' अही नोंधेला शब्दनी घणो नजीक छे।

कंदिउ सेट्ठिहिं विहडप्फडेहिं
डिक्करूयइं खद्धइं मक्कडेहिं (१३–१०–६)

'श्रेष्ठीओ आक्रंद करता हांफलाफंफला बोलता आव्या के अमारा छोकरां ने माकडाओअे फाडी खाधा'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(संदर्भ शांबे कुंडिनपुर मां पोतानी माया थी सर्जेली परेशानी नो छे)

१०. थुड्डंकिय 'रोष थी मों चडी जवुं'

दे. ना. ५, २१ मां थोडाक रोष थी मुख संकोचाइ जवुं । अेवा अर्थमां नोंधायो छे । नीचेनी पंक्ति मां थयेलो तेनो प्रयोग आ अर्थनुं तेमज जोडणीनुं समर्थन करे छे :

महुराहिउ तहिं काले थुड्डंकिउ (५–११–४)
'ते वेला मथुरापति कंसनुं मों चडी गयुं'

११. दुवालि 'तोफान, अटकचाला, आडाई, अलवीतराइ' ।

आअेहिं दुवालिहिं मत्तु तुहुं
दिढ बंदणरू जिह मत्तगउ (१–११–४५)

'आवां अटकचालांने कारणे तुं मातेला हाथीनी जेम दृढ बंधन पाम्यो छे' ।

तिहि मि दुवालि अे विणु न पवत्तइ (५–११–६)

'त्यां (दूर वनमां) पण (कृष्ण) अटकचालां कर्यां विना रहेता नथी' ।

पट्टणि अेम करंतु दुवालिउ (११–५–७)

'अे प्रमाणे नगर मां तोफानो करतो' (प्रद्युम्नकुमार

पुष्पदंतना महापुराण मां पण आ अर्थ मां शब्द वपरायो छे जुओ (८५–१०–६, ८५-२४-१४, ८५–१३–३, ८८–४–७; छेल्ला स्थान उपरना टिप्पण मां तेनो 'आलीगारपणुं' अेवो जूनी गुजराती मां अर्थ आपेलो छे । 'अलगारीपणा' नो आ मूल अर्थ छे । 'आलि' करवी अेटले 'मस्ती तोफान' करवा, 'दु + आलि' = 'दुवालि' । भरतेश्वर बाहुबलि रासमां 'आलि करइ अपार तुं' अेम आवे छे । पृथ्वीचंद्र चरित मां हाथीनी मस्ती माटे ते वपरायो छे 'महापुराण' मां ८५–२४–१४ उपर ना टिप्पण मां तेनों अर्थ 'गुलाई' आप्यो छे ते 'गोलापणुं' 'लुच्चाई' अेटले के 'अलवीतराइ' होवानुं समभाय छे ।

१२. पइद्ध 'अत्यंत आसक्त'

वुच्चइ वम्महेण कुलजाइ विसुद्धी
णरवइ तुम्ह सुय चंडाल पइद्धी (१३-७-धत्ता)

'मन्मथे (=प्रद्युम्ने कह्युं "हे राजा, विशुद्ध कुल अने जाति वाली तारी पुत्री चंडाल ने हली गई छे") ।

सं० 'प्रगृद्ध' उपरथी ने थयो छे । गुजराती 'पेधवुं' ना मूलमां आज शब्द छे अर्थ बदलायो छे ।

१३. पलक्क 'लंपट'

कावि गोवि रस संग पलक्की (५-१०-७)

'कोइक गोपी रस लंपट बनी गई' । 'प्राकृतकोशे' 'कुमारपाल प्रतिबोध' मांथी 'विसयपलक्कओ' नोंध्युं छे, अने धाहिल कृत पउमसिरिचरिउ' मां भ्रष्ट चरित्र नारी ने 'पलक्किया' कही छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. पाण 'बल'

घणुं खरूं 'विज्जा पाण'=विद्याबल' अेवा रूपे वपरायो छे :

जे वम्महु मारहु भणिविगय

ते विज्जापाणइ सयल हय (११-११-७)

'मन्मथ (प्रद्युम्न) ने अेम मारीशु, अेम कही ने गया ते बधाने तेणे विद्याबले मारी नाख्या'।

अेव भणेवि कुमारू संचल्लिउ विज्जपाणें

दीसइ णहयले जंु णं रावणु पुष्फविमाणें (१८-१-धत्ता)

'एम कहीने कुमार विद्याबले ऊपड्यो, आकाश मार्गे जतो ते पुष्पविमान मां रावण जतो होय तेवो लागतो हतो।

'पउमचरिउ' १९-७-११४ अने ३८-१७-३ मां पण आज अर्थ मां 'विज्जापाणअे' 'विज्जा पाणे हिं' मले छे।

जूनी गुजराती मां 'प्राण' शब्द 'बल' 'शक्ति' 'सामर्थ्य' ना अर्थ मां जाणीतो छे। अर्वाचीन गुजराती प्रयोग 'पराणे'='बलपूर्वक' 'अनिच्छाअे' तोमांथी ज आवेलो छे।

१५. भगवइ 'दुर्गा'

अवहरिउ केण हरि भगवइ हे ७-२-४)

'कोणे भगवती ना (दुर्गा) ना सिंह नु हरण करयु ?'

कोशमां 'भगवइ' नो आ अर्थ नथी नोंधायो।

१६. भद्दिओ 'विष्णु'

पूयण पण्हुवंति भोसावइ

भद्दिउ भीम भिउडि दरिसावइ (५-५-८)

'धबरावती पूतना बिवशबवा लासी सामे विष्णु (=कृष्ण) भयंकर भ्रकुटि देखाडवा लाग्या'।

दे. ना. ६,१०० मां तथा सिद्धहेम ८-२-१७४ 'भट्टिओ' अेवो शब्द विष्णुना अर्थमां अपायेलो छे। पण शुद्ध रूप 'भद्दिओ' होवानु जणाय छे। अने दे. ना. मां 'भद्दिओ' पाठांतर मां नोंधायु छे। पाइअसद्दमहण्णवो' माँ आपेलु 'भट्ठिअ' मुद्रण दोष छे।

१७. मूयसू 'मंगु करवु'

वम्महेण मूयसेवि मुक्की (११-६-७)

'दुर्योधननी राणी जलधिमाला ने प्रद्युम्ने (विद्याबले) मूंगी करीने छोडी दीधी'।

सरखावो 'मूअत' 'मूअस्स' (दे. ना. ६-१३७)=मूकअो प्राकृतकोशमां सेतुबंध मांथी टांकेलु 'मूअल्लइअ', 'मूअल्लिय'–मूंगु बनेलु।

१८. मोट्टियार 'नवजुवान'

मोट्टियारु णं घडियउ वज्जे (१४-१३-५)

'जाणे के वज्रे घडेलो नवजुवान होय तेवो'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(बाल भीमनुं शरीर आघातो वच्चे पण अक्षत रह्युं तेने अनुलक्षीने)

पुष्पदंतना महापुराणमां 'मोट्टियार' शब्द वपरायो छे। मारवाडी मां तथा उत्तर गुजरात नी बोली मां ते प्रचलित छे।

'मोट्टय' ने अधिकता दर्शक 'यर' प्रत्यय लागत ने 'मोट्टय्यर' उपर थी 'मोट्टयार' (जेम 'पिअयर' उपर थी 'पियार') अने पछी यकारनी असर नीचे 'मोट्टियार' थयुं छे।

१९. लेहड 'लुब्ध'

'परणरवर संयर सिर लेहडु (९–६–४)

'युद्धमां शत्रु वीरोना शिर लेवा मां लुब्ध—तत्पर'

(कृष्ण ना रथनुं वर्णन)

दे. ना. ७, २५ मां 'लेहड' नोंधायो छे, 'लिह्' चाटवुं साथे संबद्ध जणाय छे।

२०. बंधणार 'बंधन'

आखेहि दुवालिंहि पत्तु तुहुं
दिढ बंधणार निहु मत्तगउ (१–११–४, ५)

'आवा उद्धत तोफानोथी तुं मत्त बनेला हाथीना जेम दृढ बंधन पाम्यो छे।

'पउम चरिउ' मां पण आ वपरायो छे :

णिग्गउ इंदइणं बंधणारु हणुवंत हो (५३–३–१०)

'इन्द्रजित बहार नास्यो—जाणे के हनुमान नुं बंधन'।

'पउमचरिउ' ना शब्द कोशमां त्रें तेनो 'बंधनकर्ता' अेवो अर्थ कर्यो छे तेनी आधी शुद्धि थाय छे।

'को गुणेहिं न पाविउ बंधणारू' अेवी पंक्ति पण अपभ्रंश कायमः पांच्यानुं स्मरण छे। अर्थ छे 'गुणेथी कोण बंधन पामतुं नथी ?' अहीं गुण उपर श्लेष छे।

२१. वालाहिय 'धरो, ह्रद'

जउण वालाहिय हो अगाहहो
णंद गावे लहु कमलइं आणहि (५–१३–२; ३)

'यमुनाना अगाध धारा मांथी हे नंदगोप सत्वर कमलो लावी आप'।

'पउमचरिउ' १४–१०–५ मां नर्मदा नदी ने 'वालाहिप' निद्रा थी सूतेली कही छे। त्यां कदाच आज अर्थ छे।'

२२. विय्याले 'वच्चे', 'वचाल'

तिहि तेहेअे काले पडिउवयार भावगयउ
सेण्णहे विय्याले मिलियउ हरि कुल देवयउ (७–११–**घत्ता**)

'ते समये प्रत्युपसर करवानी वृत्तिवाली कृष्ण नी कुलदेवताओं सैन्यनी वच्चे आवीने मली'।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

रस्ता 'वच्चे' 'मध्यमां' एवा अर्थ मां अपभ्रशमां 'विच्चि' नोंधायो छे।(सिद्ध हेम, ८-४-४२१) 'आल' प्रत्यय लागीने थयेला 'विच्चाल' मांथी गुजराती 'वचाल्' आव्यु छे।

२३. सत्तावी संजोयण 'चन्द्र'

सत्तावी संजोमण मुहिय हे
वासहो ससहो परासरु दुहियहे (१-४-५)

व्यास नी बहेन अने पराशरनी पुत्र चंद्रमुखी (सुभद्रानु)

दे. ना. ८-२२ मां आशब्द नोंधायो छे। 'पउमचरिउ' ४१-४-३ मां पण आ शब्द वपरायो छे। 'सत्यावींश नक्षत्रो प्रत्ये जोनार' एवा यौगिक अर्थ मां रूढार्थ बन्यो छे।

२४. साहुलिय 'शाखा'

णं णवतरु अहिणव साहुलिय
करपल्लव णह कुसुमावलिय (७-१-८)

'जाणे के कर पल्लव अने नख कुसुम थी युक्त एवी नवीन तरुनी अभिनव शाखाओ'।

दे. ना. ८-५२ मां 'साहुलो' ना अन्य अर्थोनी साथे 'शाखा' अने 'भुज' अर्थ पण आपेला छे। सिद्धहेम ८-२-१३४ मां पण शाखाना अर्थ मां ते आपेलो छे।

२५. हेवाइयउ 'कोप्यो'

मगहारिउ तो हेवाइयउ (७-२-१)

'एटले मगधराज (=जरासंध) कोप्यो'।

'पउमचरिउ' मां 'हेवाइउ' २०-८-२, ५६-१०-६, ७४-४-१, ८२-११-४ शब्दनों टिप्पण मां 'गर्वनीत', 'गृद्धि प्रात', एवो अर्थ आप्यो छे। संस्कृत 'हेवाक' 'हेवाकिन्' अने गुजराती 'हेवायो' नी साथे तेनो संबंध होवानु जणाय छे। अहीं नोंधेलो शब्द 'पउमचरिउ' मां मलता 'वेहाविद्दउ' (८६-१, ७-५-८ वगेरे) ने अर्थ दष्ट ए मलतो छें। तेनो अर्थ 'कोपातुर' थाय छे, अने दे. ना. ७-९५ मा 'वेह किअ' शब्द 'रोषाविष्ट' ना अर्थ मां आप्यो छे। अहींनु 'हेवाइय' ए प्रत्यय थी 'वेहाइय' उपर थी थयु होय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org